ज्ञान तत्व (202)

(क) शेर की सवारी और खतरें । इस लेख में इस्लाम, साम्यवाद तथा संध परिवार द्वारा हिंसा की सहायता से प्राप्त विश्वस्तरीय उपलब्धियॉ तथा अब सिमी नक्सलवाद ,अभिनव भारत जैसे आतंकवादी संगठनो के खतरे के प्रभाव का उल्लेख हैं।

(ख) सोनियॉ मनमोहन जोडी के छः वर्ष –इसमे अच्छे नेता और वुरे नेताओं की पहचान बताकर हमारी प्राथमिकता पर चर्चा है।

(ग) प्रश्नोत्तर –महिला आरक्षण।

(घ) प्रश्नोत्तर–गांधी और विनोबा की तुलना और विवेचना।

(च) प्रश्नोत्तर–कृत्रिम उर्जा की मूल्य समीक्षा पर भरत झुनझुन वाला तथा सांसद एन के सिंह के विचारों की समीक्षा।

(छ) एम एस सिंगला का प्रेम विवाह पर विचार और उत्तर।

(ज) एम एस सिंगला का जनगन मन पर ।

(झ) अपनो से अपनी बात में मेरी योजना।

(क) शेर की सवारी का सुख और खतरा

शेर की सवारी में बहुत आनन्द भी है और लाभदायक भी होती है। शेर की सवारी से व्यक्ति की शारीरिक शक्ति कई गुना बढ़ जाया करती है। शत्रुओं का नाश करने में शेर स्वयं ही पर्याप्त होता है। यदि वह शेर आपकी शक्ति के साथ जुड़ जावे तो फिर उसकी शक्ति का कहना ही क्या । पौराणिक कथाओं में दुर्गा जी द्वारा स्थापित खूंखार राक्षसों का वध करने में मिली सफलता में शेर की भूमिका का पूरा पूरा योगदान रहा है। शेर के खतरनाक हिंसक स्वभाव को देखते हुए भी भारत की राज्य व्यवस्था शेर को सम्मान जनक स्थान पर स्थापित करती है यही इस बात का पर्याप्त प्रमाण है।

शेर की सवारी में जहॉ सुख है वहॉ खतरा भी बहुत है। शेर को जब शत्रु नहीं मिलते तो वह अपनी भूख मिटाने के लिये निर्दोष लोगों पर भी अक्रमण करना शुरू कर देता है। आप चाहकर भी शेर को इस अत्याचार से नहीं रोक सकते क्योकि शेर के भोजन की व्यवस्था आपकी मजबूरी है। शेर बेगुनाहों पर अत्याचार करता है और आप चुप रहते है क्योकि आपके पास कोई और उपाय नहीं है। किन्तु एक समम ऐसा भी आता है जब शेर को पेट भरने के लिये कोई और नहीं दिखता और तब वह शेर आपके लिये खतरा बन जाया करता है। आप शेर से मुक्त होने का बहुत प्रयत्न करते है किन्तु तब तक बहुत देर हो चुकी होती है और तब आप उक्त शेर के लिये भोजन के रूप में काम आते है। श्रृष्टि का यही क्रम है जो पुराने समय से चल रहा है। अनेक लोग तो प्रारंभ से ही शेर की सवारी से दूरी बनाकर रखते है किन्तु कुछ ऐसे भी होते है जो इतिहास से सबक न सीखकर कुछ नया करना चाहते है और तब उन्हे पता चलता है कि शेर की सवारी में सुख तो बहुत मिलता है किन्तु खतरे भी कम नहीं होते ।

सामाजिक आधार पर हिन्दुत्व तथा राजनैतिक आधार पर लोकतंत्र ऐसी शेर की सवारी से बचना चाहता है। हिन्दुत्व में अहिंसा को बहुत महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त रहा है। समाज तो हिंसा से अधिकतम दूरी बनाने की सलाह दी ही जाती है राज्य को संतुलित हिंसा की ही अनुमति होती । लोकतंत्र में हिंसा का कोई स्थान नहीं होता। अपराधों को छोड़कर हिंसा सर्वत्र वर्जित रही है। वर्तमान विश्व में तीन ही प्रमुख समूह दिखते है जिन्होंने शेर की सवारी का आनन्द लिया (1) इस्लाम (2) साम्यवाद (3) संघ परिवार ।

इस्लाम ने सबसे पहले हिंसा को सैद्धान्तिक आधार दिया। प्रारंभ से ही इस्लाम ने संगठन को शक्ति माना। गुण की अपेक्षा संख्या की चिन्ता का प्रारंभ इस्लाम से हुआ। न्याय की अपेक्षा अपनत्व के महत्व का विस्तार भी इस्लाम ने ही दिया । इस्लाम को इस शेर की सवारी का लाभ भी मिला । पिछले एक हजार वर्षो से इस्लाम लगातार आगे बढ़ रहा है। उसे सफलता ही सफलता मिलती रही। कुछ सूफी सन्तों ने इस्लाम का मार्ग बदलने की भी कोशिश की किन्तु वे किनारे पर दिये गये । बेचारे सूफी सन्तों की दरगाह पर चादर के अतिरिक्त उनके विचारों का कोई उपयोग नहीं । मुसलमानों के हिंसक स्वरूप की ढ़ाल के रूप में ही सूफी विचारों का उपयोग किया जाता हैं

भारत में इस्लाम की प्रगति का आधार शेर रूपी संगठन शक्ति की क्षमता ही है। पूरे भारत में इनका एक संगठित स्वरूप है जो विश्व इस्लामिक बिरादरी से संचालित है। इन्होंने धर्म और राजनीति का पूरा पूरा समन्वय भी कर रखा है। सभी राजनैतिक दल इनकी संगठन शक्ति के समक्ष समझौता करने को मजबूर है। भारत में योजना बद्ध तरीके से अपनी संख्या बढ़ाने का पूरा पूरा प्रयास करते रहते है। ये भारत में भी पूरे विश्व के समान ही सफलता की ओर बढ़ रहे है।

साम्यवाद ने भी संगठन शक्ति को आधार बनाया । इसने धर्म, समाज, गुण, आदि से स्वयं को दूर घोषित करके राज्य पर ही अधिकार करने की योजना बनाई । इसने भी हिंसा का पूरा पूरा समर्थन किया । बल्कि साम्यवाद ने तो इस्लाम से भी कुछ आगे जाकर हिंसा का पक्ष लिया । साम्यवाद ने संपूर्ण विश्व में जिस बेशर्मी से वर्ग संघर्ष का नारा दिया वैसी योजना तो इस्लाम भी नहीं दे सका । साम्यवाद ने विल्कुल खुलकर वर्ग संघर्ष की आवश्यकता स्थापित की । इसने कभी लोकतंत्र को स्वीकार नहीं किया । सर्वहारा वर्ग की तानाशाही को इसने आधार बनाया और पूंजीवाद को शत्रु । पूंजीवाद बनाम सर्वहारा का वर्ग निर्माण करके वर्ग संघर्ष का इसका नारा चल निकला और साम्यवाद का शेर दहाडता हुआ दुनियां की स्थापित व्यवस्था को रौंदता चला गया । अल्प काल में ही साम्यवाद लोकतंत्र के लिये खतरा दिखने लगा। यहॉ तक कि अनेक देश, जो सीधे सीधे साम्यवादी तानाशाही से सहमत नहीं थे, उन्होंने भी समाजवाद के नाम पर पूंजीवाद के विरूद्ध बीच का मार्ग निकाल लिया। साम्यवाद के विस्तार की गति इस्लाम से भी अधिक तेज थी। सफलता मिलती चली गई ।

भारत में भी साम्यवाद तेजी से बढ़ा । नेहरू जी के नेतृत्व वाली भारत सरकार ने भी समाजवाद घोषित करके अपनी जान बचाई । नेहरू जी ने घोषित साम्यवाद और अघोषित साम्यवाद रूपी दो भाग बनाकर अघोषित साम्यवादियों को अपने साथ मिला लिया। इस तरह भारत में भी साम्यवाद दोनों दिशाओं से फलता फूलता रहा । तीन प्रदेशों में तो घोषित साम्यवाद और शेष भारत में समाजवाद के नाम से अघोषित साम्यवाद बढ़ता रहा । यदि लोहिया जी ने बाधा पैदा न की होती तो नेहरू जी तो उस राह पर चल ही रहे थे । साम्यवाद का विस्तार इतना तेज था कि अहिंसक गांधीवादी संस्थाऍ भी पूरी तरह साम्यवाद के प्रभाव में आ गई । गांधी जी लोकतंत्र को लोक स्वराज्य की दिशा में ले जाना चाहते थे और साम्यवादी लोकस्वराज्य की अपेक्षा आर्थिक असमानता को आगे लाकर लोक स्वराज्य के मुद्दे को पीछे करना

चाहते थे । साम्यवादियों की सर्वोदय में इस सीमा तक घुस पैठ हुई कि सर्वोदय ने ग्राम स्वराज्य का अर्थ ही बदल दिया और स्वराज्य की जगह सुराज्य की माला जपने लगे ।

इस्लाम की शेर की सवारी की सफलता से प्रभावित होकर कुछ हिन्दुओं ने भी हिन्दुत्व की मूल अवधारणा ''अहिंसक गाय की सवारी'' छोड़कर शेर की सवारी का मार्ग चुना । इन्होंने भी संघे शक्ति कलौ युगे का नारा देना शुरू किया । इन्होंने समाज की जगह राष्ट्रवाद को आधार बनाया । राजनीति को इन्होंने अपने साथ जोड़ लिया । तर्क के स्थान पर भाई चारा का सहारा लिया गया । संघ परिवार ने भी हर उस मार्ग की दिशा में चलना शुरू किया जिस मार्ग से इस्लाम बढ़ रहा था । संघ परिवार इस्लाम और साम्यवाद की कार्य प्रणाली में सिर्फ एक ही फर्क था कि इस्लाम भारत में अल्पमत में होने के कारण छिपकर गुप्त योजनाओं पर काम करता था तो संघ परिवार बहुमत के घमंड में खुले आम दहाड़ते हुए ।

प्रारंभ से ही संघ परिवार की गति भी तेज रही । पूरे भारत में संघ परिवार भी बढ़ता चला गया । धन बल और कार्यकर्त्ताओं की इनके पास कभी कोई कमी नहीं रही । समाज शब्द को ही किनारे करके राष्ट्र शब्द स्थापित हुआ । हिन्दुत्व की वास्तविक शक्ति ''विचार मंथन'' का स्थान गाय गंगा ने ले लिया । संघ परिवार का विस्तार यहॉ तक हुआ कि वर्तमान में कई प्रदेशों में उसकी सरकारे सफलता पूर्वक चल रही है और आम चुनाव में वह सबसे बड़ी ताकत बनकर सामने आई ।

दुनियां में इस्लाम और साम्यवाद की शक्ति बढ़ी । भारत में भी इस्लाम, साम्यवाद, तथा संघ परिवार की शक्ति बढ़ती चली गई और वास्तविक हिन्दुत्व अल्प मत में आ गया । स्पष्ट दिखने लगा कि अब तर्क, अहिंसा, समाज व्यवस्था आदि बीते दिनों की बात है। अब तो संख्या बल की छीना झपटी ही हमारी एक मात्र सक्रियता है। संपूर्ण भारत में साम्यवादी, मुसलमान, इसाई और संघपरिवार के एजेन्ट घूम घूम कर हिन्दुओं का मत परिवर्तन करने लगे । यहॉ तक कि सरकार भी वर्ग संघर्ष को आधार बनाकर काम करने लगी ।

एकाएक स्थिति में बदलाव आया । तीनो ही संगठनों के कट्टरवादियों ने अपनी स्वतंत्र राह बनाई । साम्यवादियों पर नक्सलवादी, मुसलमानों पर सिमी जैसे संगठन तथा संघ परिवार पर अभिनव भारत जैसे आतंकवादी संगठन भारी पड़ने लगे । वैसे साम्यवाद स्वतः ही पूरी दुनियां से परास्त हो रहा है किन्तु नक्सलवाद ने उस रही सही कसर को भी पूरा कर दिया है। जो साम्यवादी नक्सलवाद को पुचकार कर रहे थे वही अब बंगाल मे परेशान है। ये नक्सलवाद के विरूद्ध आवाज भी उठा रहे है। किन्तु इनकी आवाज मजाक के रूप में सुनी जा रही है। मुस्लिम जगत की तो हालत इनसे भी ज्यादा खराब है। आज दुनियां का हर मुसलमान संदेह की नजर से देखा जा रहा है। पडोस में बैठे मुसलमान की दाढ़ी या नाम ही पड़ोसी को सतर्क कर रहा है। भारत में धीरे धीरे ऐसा ही वातावरण बन रहा है। पहले मुसलमानों के विरोध प्रदर्शन को महत्व दिया जाता था किन्तु अब उसे आदत माना जाने लगा है। कुछ वैसा ही हाल संघ परिवार का भी शुरू हो चुका है। अभिनव भारत जैसी आतंकवादी घटनाऍ प्रकाश में आने के बाद संघ परिवार वालों को भी सफाई देते नहीं बन रहा ।

गांधी हत्या में संघ परिवार का कोई हाथ नहीं था। इसके बाद भी उस समय से आज तक गांधी हत्या का सर्वाधिक नुकसान संघ परिवार ही उठा रहा है। आज भी देश भर में हो रहे हिन्दू आतंकवादी आक्रमणों से संघ परिवार का कोई लेना देना नहीं है। किन्तु संघ परिवार का हर कार्यकर्त्ता इस मामले में बचाव पर है। उत्तर देते नहीं बन रहा है। संघ के एक वर्तमान प्रचारक देवेन्द्र गुप्ता जी की

गिरफतारी के बाद तो और भी जटिल स्थिति आ गई है। आपने लगातार हिंसा का समर्थन किया । किसी सिरफिरे ने हिंसा कर दी तो लपटों से आपके हाथ भी तो जलेंगे। यदि शेर की सवारी का आपने लाभ उठाया है तो शेर के खतरे कौन उठायेगा। साम्यवाद के तो अप्रासंगिक होने के कारण उससे कोई प्रश्न खड़े नहीं कर रहा। साथ ही साम्यवादी लगातार मुखर होकर नक्सलवाद के खिलाफ बढ़ चढ़ कर बोल रहे है। मुसलमानों का मामला भारत तक सीमित न होकर विश्व स्तरीय है। उनके लिये विश्व स्तरीय नीतियॉ बन रही है किन्तु संघ परिवार को हिन्दू बहुमत का कभी समर्थन नहीं मिल पाया है। अब जब ऐसी ऐसी घटनाएँ प्रकाश में आएँगी तब आपका क्या हाल होगा ? अब तक संघ परिवार का उतना बुरा हाल नहीं हुआ है जितना साम्यवाद का हो रहा है अथवा मुसलमानों का दिख रहा है किन्तु यदि संघ परिवार ने अब भी हिंसा के समर्थन की राह नहीं छोड़ी तो उसका भी डूबना निश्चित समझिये ।

मै अंत मे कहना चाहता हूँ कि शेर की सवारी का भरपूर लाभ इस्लाम ने भी उठाया है, साम्यवाद ने भी और संघ परिवार ने भी ।अब सिमी नक्सलवाद तथा अभिनव भारत जैसे अतिवादी संगठनों के मैदान में आ जाने से आप तीनों के समक्ष संकट मुँह बाये खडा है। या तो तत्काल हिंसा के विरूद्ध घोषणा की पहल करिये अन्यथा परिणाम भुगतने को तैयार रहिये। शेर की सवारी का अब तक जैसा इतिहास रहा है, आप उससे बच नही सकते । रोकिये प्रवीण तोगडिया और अशोक सिंघल को । संकट का समय है। बचाव की मुद्रा हैं । उथल पुथल का वातावरण है। बहुत सोच विचार कर बयान देवे । किसी भी प्रकार की हिंसा का खुला विरोध शुरू कर दीजिये । कोई हिन्दू आपकी मदद के लिये नही आयेगा क्योकि आम हिन्दू आंतकवाद से घृणा करता है। यह समय विस्तार की योजना का न होकर सुरक्षा की योजना का है । छोड दीजिये बडी बडी असंभव घोषणाएँ करना और थोडा झुककर धरातल देखियें। अहिंसा, विचार मंथन , तर्क ,आदि हिन्दुत्व की मूल अवधारणाएँ स्थिति को संभाल सकती है। अन्यथा साम्यवाद ,इस्लाम तथा संघ परिवपार का भविष्य समाज एक साथ करेगा इसके आसार दिखने लगे हैं।

(ख) सोनियां मनमोहन जोड़ी के छः वर्ष

लगभग छः वर्ष पूर्व जब अटल जी के स्थान पर सोनिया जी के नेतृत्व पर जनता के विश्वास की मुहर लगी वह एक अजीब संयोग था अन्यथा उस समय का वातावरण तो पूरी तरह अटल जी के राजग के पक्ष में ही दिख रहा था। संप्रग सरकार बनते ही शंकाओ कुशंकाओं ने घर करना शुरू किया क्योकि संप्रग को बहुमत दिलाने में वामपंथ की बहुत बडी भूमिका भी थी और सरकार को परेशान करने मे वामपंथ की भूमिका का पुराना रेकार्ड भी साथ था। मनमोहन सोनिया जोडी ने सारी आशंकाओं कुशंकाओं को किनारे करते हुएँ सफलता पूर्वक वामंपथ दक्षिणपंथ की अवसरवादी एकता को धूल चटा दी और दुबारा फिर सरकार बना ली।

एक वर्ष पूर्व के चुनावों में जनता ने सभी राजनैतिक समीकरणो से दूर हटकर चरित्र को अधिक महत्व पूर्ण बनाया। केन्द्र में सोनिया मनमोहन सिंह पर विश्वास व्यक्त किय। गया तो प्रदेशों मे गुण दोष के आधार पर नरेन्द्र मोदी ,रमण सिंह, नितिश कुमार, येदुरप्पा , गहलोत, नवीन पटनायक आदि व्यक्तिगत रूप से बढ़ाये गये। झारखंड में भी जनता ने अच्छी छवि वाले वावूलाल मराडी को कुछ मजबूत ही किया । एक आशा जगी कि राजनीति मे भी शराफत मजबूत हो रही है।

छः वर्षो के कार्य की हम समीक्षा करें तो सामाजिक स्तर पर सोनिया मनमोहन जोडी ने कही सामाजिक चरित्र के उच्च मानदण्डो को कमजोर नही किया है । लालू ,मुलायम, शिबु सोरेन , जयललीता ,मायावती ,ममता अर्जुन सिंह, अजित जोगी, प्रकाश करात जैसे तिकडम वाजो को लगातार कमजोर करने की मुहिम चलती रही और आज भी जारी है । यह तिकडमी समूह अब भी निराश तो नही हुआ है और उछल कूद लगातार जारी है किन्तु इन सबका व्यक्तिगत और सामूहिक अस्तित्व कुछ न कुछ घट ही रहा है। राष्ट्रीय मामलों में भी इस मनमोहन सोनिया जोड़ी ने कई अच्छे काम किये । नरेगा तथा सूचना का अधिकार तो ऐतिहासिक प्रयत्न माने ही जोते है, शिक्षा तथा खाद्य सुरक्षा विधेयक भी कुछ अच्छा ही करेंगे ऐसी संभावना है। अर्थनीति पूरी तरह सफल रही है। मंहगाई को मुद्दा बनाकर सरकार को अस्थिर करने का भाजपाई साम्यवादी अवसरवादी गठजोड़ भी ध्वस्त हो गया । सरकार धैर्य और शालीनता से सारे षडयंत्रों को असफल करती रही है। विदेश नीति भी पूरी तरह सफल ही मानी जा सकती है। सब प्रकार के अमेरिका विरोधी लावी व दबावों को किनारे करते हुए भारत ने अमेरिका आदि देशों से मित्रता को मजबूत कर लिया। बंग्लादेश, श्रीलंका, नेपाल आदि के साथ भी कोई बचकानी हरकत नही हुई । चीन के मामले में भी गंभीर रूख ही रखा गया। पाकिस्तान के साथ भी सब कुछ समयानुकूल ही है।

साम्प्रदायिकता के मुद्दे पर सरकार ने राजनैतिक कारणों से थोड़ा सा मुस्लिम तुष्टीकरण की ओर झुकने की कोशिश की किन्तु शीघ्र ही संभल गये । कुल मिलाकर साम्प्रदायिक मामलों मे भी सरकार की दिशा ठीक ही रही है। छः वर्षो के कार्यकाल में अन्य कोई भी ऐसा मामला देखने में नहीं आया जिसमे मनमोहन सोनियां जोड़ी ने राजनैतिक चरित्र पतन को प्रोत्साहित करने की कोशिश की हो ।

पिछले छः महिनों से सोनिया जी कुछ गड़बड़ करती दिख रहीं है। अब तक सोनिया जी स्वयं को कांग्रेस की जगह देश का नेता समझकर राष्ट्रीय स्तर की चिन्ता कर रहीं थी किन्तु राहुल गांधी को प्रधान मंत्री बनाने की जल्दी में उनके स्तर में कमी आई है। मनमोहन सिंह चिदम्बरम् नक्सलवाद को राजनैतिक लाभ हानि से दूर रखकर राष्ट्रीय समस्या के रूप में सुलझाना चाहते है तो दूसरी ओर दिग्विजय सिंह आदि नें राहुल गांधी के माध्यम से इस इस समस्या को राजनैतिक लाभ हानि के तराजू पर तौलना शुरू कर दिया है। समझाया गया कि यदि केन्द्र सरकार को ही नक्सलवाद से निपटना हो तो क्यो नही कुछ दिन और बिगड़ने दे और जब इन प्रदेशों की कांग्रेस विरोधी सरकारों का पतन हो जावे तब केन्द्र हस्तक्षेप करके नक्सलवाद से निपट ले। आखिर एक ठीक चलती हुई लाइन को बिना कोई उपरी आश्वासन के दिग्विजय सिंह तो चुनौती दे नहीं सकते थे। अवश्य ही इसमें राहुल गांधी या सोनिया गांधी की संकीर्ण राजनैतिक इच्छाओं को जगाया गया होगा। हो सकता है कि सोनिया राहुल नक्सलवाद को अनियंत्रित चुनौती न मान रहे हो अथवा इनके मन में कोई और गंभीर योजना हो किन्तु अब तक के संकेत तो यही स्पष्ट करते है कि इनकी राजनैतिक तिकडमी भूख को जगाने में दिग्विजय सिंह सफल रहे है।

दूसरा मुद्दा है महिला आरक्षण का । सोनिया जी ने जिस तरह महिला और पुरूष के रूप में समाज को बांटने की मुहिम को हवा दी वह भी कोई अच्छी दिशा नहीं है। सोनिया जी को देश और समाज एक महिला नेता के रूप मे नहीं देखता है। मैं मानता हूँ कि पश्चिमी संस्कारों के कारण उन्हें पारिवारिक संरचना के महत्व का ज्यादा ग्यान नहीं है किन्तु भारत में तो परिवार व्यवस्था का मजबूत होना एक अच्छी दिशा मानी जाती है। परिवारिक ताने बाने को छिन्न भिन्न करने से सोनिया जी को दूर ही रहना चाहिये था। जो महिला और पुरूष स्वेच्छा से वैश्यालयों में इकट्टे हो तब भी कानून और जो महिला और पुरूष नौकरियों में संसद में अन्य स्थानों पर दूरी बनाकर रखना चाहे तब भी कानून । महिला पुरूष के

प्राकृतिक, स्वाभाविक, पारिवारिक, सामाजिक रिश्तों में इस तरह अनावश्यक कानूनों की घुसपैठ क्यो? स्त्री और पुरूष के बीच परिवारिक रिश्तों के बीच अविश्वास की खाई को चौडी करना और जब टूटने लगे तब तलाक के समय बाधा पैदा करना सरकारी ना समझी का प्रमाण है। गोवा के मुख्यमंत्री ने लाइन से हटकर महिलाओं के विषय में कुछ कह दिया तो अनुशासन भंग हो गया । मंत्रिमंडल के किसी सदस्य ने बाहर में कुछ कह दिया तब भी अनुशासन भंग हो गया किन्तु परिवार का कोई लडका लड़की परिवार में रहते हुये खुलेआम अनुशासन भंग करे उसे प्रोत्साहन । यदि किसी मंत्री को अनुशासन भंग से पूर्व मंत्रिपद छोड़ना नैतिकता है तो फिर लड़का लड़की भी परिवार छोड़कर अनुशासन भंग करे तो कौन रोकता है? समाज व्यवस्था है कि महिला और पुरूष एक परिवार में शामिल होकर अपना स्वतंत्र अस्तित्व सीमित कर लेते है। या तो वे विवाह पूर्व के माता पिता के अनुशासन से बंधे है या विवाह के बाद पति पत्नी के आपसी अनुशासन से । इस परिवार व्यवस्था को कमजोर करके स्त्री पुरूष का वर्ग भेद मजबूत करना समाज के लिये हानिकर है। हमें महिला और पुरूष सशक्तिकरण नहीं चाहिये और न ही भारतीय संस्कृति का कभी ऐसा आदर्श रहा है। हमें चाहिये परिवार सशक्तिकरण जिसमें महिला और पुरूष, युवक और वृद्ध एक साथ मिलकर सामंजस्य पूर्वक रह सके। और यदि न रह सके तो प्रेम पूर्वक अलग अलग हो जावें । किन्तु जब तक एक साथ है तब तक उसी तरह अनुशासन को समझें जैसे मंत्रिमंडल में या किसी राजनैतिक दल में अनुशासन मानते है। व्यक्ति परिवार और समाज के अधिकारों की सीमाएँ तय होनी चाहिये किन्तु इन सीमाओं के अन्दर तोड़ फोड़ का कोई बाहरी षड्यंत्र कभी नहीं होना चाहिये । जाने अनजाने सोनिया जी से वैसी भूल हो रहीं है।

आज पूरे भारत के राजनैतिक वातावरण में महिला आरक्षण के पक्ष में हवा है। सोनिया जी उसका लाभ उठाना चाहती है। मैं नहीं चाहता कि सोनिया जी आरक्षण का विरोध करके उस लाभ को ठोकर मारें । मैं चाहता हूँ कि सोनिया जी आरक्षण मुद्दे को व्यक्तिगत मुद्दा बनाने की भूल न करें। इतिहास आपको परिवार व्यवस्था को पलीता लगाने वाली महिला के रूप में याद करने लगेगा । तात्कालिक लाभ के उद्देश्य से दीर्घकालिक सामाजिक क्षति से आप स्वयं को पिछले छः वर्षो से दूर रखती रहीं है और उनका लाभ भी आपको समाज ने भरपूर दिया है तो अब धैर्य तोड़ना ठीक नहीं। जिस तरह छः वर्षो से अपनी गरिमा बनाकर रखी है वह गरिमा अब राजनैतिक लाभ हानि की कसौटी से धूमिल करना ठीक नहीं। दिग्विजय सिंह के नक्सलवादियों के साथ कैसे रिश्ते है, संपूर्ण देश जाने या न जाने किन्तु छत्तीसगढ़ का बच्चा बच्चा जानता है। आप उनकी सलाह पर राष्ट्रीय सुरक्षा के मापदंड बना रहीं है। इसी तरह साम्यवादियों की परिवार व्यवस्था के संबंध में धारणा भी जग जाहिर है। भारतीय जनता पार्टी का केन्द्रीय नेतृत्व सत्ता लोलुपों के जमघट से अधिक कुछ बचा ही नहीं। ऐसे दलो के उकसाने पर आपका महिला स्वाभिमान जग गया है। ये दोनों ही बातें अच्छे संकेत नहीं है। अभी तो अन्तिम निर्णय होना बाकी है। और आप सोच समझकर निर्णय करेंगी ऐसी उम्मीद है किन्तु सतर्क करना मेरा कर्त्तव्य था जो मैने किया ।

छः वर्षो के राजनैतिक लेखे जोखे में कुल मिलाकर मनमोहन सिंह सौ प्रतिशत और सोनिया गांधी निन्यान्नवे प्रतिशत खरे उतरे है। अब तक कोई दाग नही लगा है। विपक्षी दलों की सरकारों से भी इन्होंने शालीन ही व्यवहार किया है। दूसरी ओर विपक्षी भाजपा का आकलन करे तो इनके केन्द्रीय नेतृत्व को सौ में से एक अंक देने में भी दिक्कत हो रही है। इनका केन्द्रीय नेतृत्व इस सीमा तक तिकड़मी हो गया कि वह वामपंथियों तक से हाथ मिलाने को तैयार हो गया । इन्होंने मुस्लिम आतंकवाद की आवश्यकता से ज्यादा निंदा की और हिन्दू आतंकवाद को स्वाभाविक से ज्यादा समर्थन दिया। कांग्रेस के थूके हुए को

चाटने में इन्होंने बहुत अधिक जल्दबाजी की । शिबू सोरेन की ताजपोशी ने तो अत्यन्त ही हास्यास्पद स्थिति बना दी । इन्होंने अटल जी के कार्यकाल में कई बार डीजल पेट्रोल के मूल्य बढ़ाये किन्तु मनमोहन सिंह द्वारा डीजल पेट्रोल मूल्य वृद्धि के विरूद्ध वामपंथियो की गोद में जा बैठे। अवसरवादिता का कीर्तिमान स्थापित किया गया। ऐसी स्थिति में मै इनके केन्द्रीय नेतृत्व को शून्य से अधिक क्या अंक दूँ। इनकी प्रादेशिक सरकारों ने अवश्य ही इनकी लाज बचा रखी है अन्यथा इनका केन्द्रीय नेतृत्व तो डूबा हुआ ही मानना चाहिये। यदि ये दस पांच पैसा भी रमण सिंह जी से सलाह लिये होते तो ऐसी दुर्गति कभी नहीं होती।

कुल मिलाकर मै यह कह सकता हूँ कि भारतीय राजनीति की वर्तमान स्थिति में आशा की किरणें कुछ मजबूत हुई है। सोनिया, मनमोहन, चिदम्बरम् की लाइन लगभग संतोष प्रद है। अडवानी जी करात जी आदि यदि किसी प्रादेशिक चरित्र को आगे आने दे तो देश का और भी अधिक सौभाग्य होगा । जो कुछ होगा अच्छा ही होगा । ऐसी उम्मीद दिख रही है। भविष्य निराशा जनक नहीं मानना चाहिये ।

(ग) कार्यालयीन प्रश्नो के उत्तर

(1)प्रश्न – इस लेख मे आपने महिला आरक्षण का विरोध किया । महिलाओं पर अत्याचार आप किस प्रकार रोकेंगें?

उत्तर– महिला पुरूष युवक वृद्ध व्यक्तिगत रूप से पृथक हैं किन्तु सामूहिक रूप से पृथक पृथक मानना घातक परंपरा है। ये सब मिलकर परिवार बनते है। परिवार बनते ही इनकी पृथक पहचान समाप्त हो जाती है और रह जाती है एक पारिवारिक पहचान। इनमे से किसी एक का भी सृजन स्वतंत्र नहीं होता। कोई यह नहीं कह सकता कि वह नारी से उत्पन्न है या नर से। नर और नारी के एकाकार प्रयास से संतान उत्पन्न होती है और एकाकार प्रयास से ही पूरा जीवन समाप्त करतें है। समाज ने इन्हे व्यक्तिगत रूप से कुछ मौलिक अधिकारों की सुरक्षा का वचन दिया है। इसके आगें वे परिवार के अंग मात्र हैं।

जब पुरूष और महिला पृथक पृथक वर्ग है ही नही तो वर्ग के रूप में चिन्तन की आवश्यकता ही नहीं हैं। हजारों वर्षों से पृथक पृथक वर्ग की मान्यता ने ही समस्याएँ पैदा की है। प्राचीन समय में स्वार्थी पुरूषों ने महिलाओं को पृथक वर्ग कहकर उनपर तरह तरह के आरोप जड़ दिये। अब स्वार्थी महिलाएँ पुरूषों को वर्ग घोषित करके अत्याचार के आरोप जड़ रही है। मै जब भी किसी सभा में जाता हूँ तो यदि उस सभा में एक भी महिला राजनीति से जुडी होगी तो वर्ग विद्वेष की चर्चा अवश्य करेगी। यह घातक हैं। आज समाज में निन्यान्नवे प्रतिशत लोग स्त्री और पुरूष को पृथक पृथक वर्ग के रूप में मानने लगे हैं जो पुरी तरह असत्य है।

किसी महिला के साथ अत्याचार हो सकता है। उसके लिये कानून है। किन्तु महिलाएँ और पुरूष बहुवचन होते ही नहीं क्योकि न उनका जन्म स्वतंत्र हुआ है न ही स्वतंत्र जन्म दे सकते हैं। किसी प्रकार के अलग कानून बन ही नही सकतें क्योकि उनका पृथक अस्तित्व ही नहीं है। महिला पुरूष के बीच अत्याचार की जो अतिरंजित कहानिया बताई जाती है, उनमे अनेक तो प्राकृतिक आवश्यकता है। स्त्री और पुरूष विवाह उपरान्त पति पत्नी बन जाते हैं। दोनो के सुखी जीवन के लिये पति की आक्रामक ।जजंबापदह मुद्रा तथा स्त्री की आकर्षक ।जजतंबजपदह मुद्रा होनी चाहिये। यदि यह मुद्रा उलट जावे तो

परिवार का इलाज कराना पडेगा। इस अन्तर की सीमा तय हो सकती है। यदि अंतर उस सीमा से अधिक हो और आपस मे पारिवारिक समझौते या सामाजिक अनुशासन से ठीक न हो तब कानून का हस्तक्षेप हो। यहॉ तो कोई सीमा ही तय नहीं है। न्यायाधीश पति पत्नी के आंतरिक सम्बन्धो पर निर्णय देते हैं कि पत्नी की सहमति के बिना किया गया सम्भोग बलात्कार माना जायगा। आचार्य पंकज जी ने एक किताब लिखी है ''सम्यक संभोग, सदा निरोग '' । पुस्तक के अनुसार पुरूष को हमेशा आक्रामक होना चाहिये । जज के अनुसार पत्नी की सहमति होनी चाहिये । क्या सीमा रेखा हो यह न पति पत्नी तय करेंगें न परिवार न समाज। तय करेगा कानून या कोर्ट । सेक्स के लिये भूखे दो स्त्री और पुरूष को दरोगा रोकेगा । बेशर्मी तो इस सीमा तक है कि सरकार वैश्यालयो पर भी टैक्स लगाना चाहती है। भारत में अपना शरीर बेचकर भरण पोषण को मजबूर महिलाओं की मजबूर आमदनी पर भी सरकार टैक्स लगायेगी । जबकि उसे शर्म करना चाहिये कि कोई पेट भरने को मजवूर महिला वैश्यावृति कर रही है।

मेरा आशय सिर्फ यही है कि महिला उत्पीड़न को स्वीकार करना बहुत घातक परंपरा है क्योकि महिला उत्पीडन को स्वीकार करने का मतलब है दोनो को पृथक वर्ग स्वीकार करना । यह स्वीकार बहुत हानिकर है।

(घ)(2) प्रश्न – आपके नाम से निर्दलीय साप्ताहिक मे प्रकाशित गांधी और विनोबा के संबंध मे एक विवेचना पढ़ी जो इस प्रकार है । ''वर्षो की स्वतंत्रता के बाद भी हम भारत मे भय या भ्रष्टाचार मुक्त व्यवस्था देने में सफल नही हो रहे है क्योकि हमने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के ग्राम स्वराज्य की परिभाषा को छोड अपनी नयी परिभाषा बना ली। गांधी जी गांवों को अपने निर्माण की स्वतंत्रता हमारा दायित्व मानते थे और अन्य कार्यो को हमारी सलाह । हमने गांवो को अपने निर्णय की स्वतंत्रता दिये बिना ही विकास की योजनाऍ बनानी शुरू कर दी जिनका दुष्परिणाम हुआ भ्रष्टाचार ,अन्याय व आतंकवाद आदि । स्वशासन का परिणाम है सुशासन न कि स्वशासन सुशासन का आधार है किन्तु हमने पहले सुशासन के प्रयास शुरू किये जो बिल्कुल असंभव कार्य था।

गांधी की हत्या के तत्काल बाद गांधी जनो का नेतृत्व विनोबा जी को दिया गया। गांधी जी व विनोबा मे बहुत फर्क था। गांधी जी एक मौलिक विचारक थे । और विनाबा जी उच्च कोटि के विद्वान । गांधी जी सामाजिक राजनीति के ज्ञाता थे और विनोबा जी धार्मिक सामाजिक विषयो के । विनोबा जी को राजनीतिक छल प्रपंच का ज्ञान नगण्य था । गांधी जी समझदारी प्रधान थे तो विनोबा जी शराफत प्रधान। गांधी महापुरूष थे और विनोबा जी संत पुरूष । गांधी जी का त्याग वैचारिक था और विनोबा जी का भावनात्मक। गांधी जी परिपाटी बनाने की क्षमता रखते थे और विनोबा जी बनी बनाई परंपरा पर चल सकते थे । गांधी जी सूर्य थे आोर विनोबा जी चन्द्रमा । गांधी मे सूर्य के समान उष्णता थी और विनोबाजी मे चन्द्रमा के समान शीतलता।

यही कारण था कि गांधी जी ने सदा संघर्ष को प्राथमिकता दी और विनोबा जी ने संघर्ष को ठंडा करने मे । गांधी जी यदि जीवित होते तो पद लोलुप नेताओं से टकराव होता । दूसरी ओर गांधी जी के ही पद चिन्हो पर चलने का दावा करने वाले विनाबा जी राजनेताओ को खुली छूट दे स्वयं भूदान आंदोलन मे लग गये। भूदान आंदोलन एक सामाजिक समस्या के समाधान का कार्य तो था किन्तु लोक स्वराज्य संघर्ष का कार्य नही था। मगर विनोबा जी ने किया । उन्होने कांचन मुक्ति व राजनीति से दूरी बनाने की बात कहकर सर्वोदय कार्यकर्ताओ को विषविहीन सर्प बना दिया जो या तो संघर्ष से दूर हो गये और समाज सेवा मे लग गये अथवा राजनेताओ के पिछलग्गू बन गये । विनोबा जी ने वर्ष 1942 मे

स्वराज्य शास्त्र पुस्तक रची । लोकनायक जय प्रकाश नारायण ने वर्ष 1954 मे लोक स्वराजय पर बहुत अच्छी पुस्तक रची । डॉ0 राममनोहर लोहिया चौखम्बा राज्य की वकालत करते रहे ।किन्तु गांधी हत्या के बाद योजना पूर्वक गांधी की स्वराज्य की अवधारणा को लगातार चर्चा से दूर किया गयां। पंड़ित जवाहर लाल नेहरू डॉ बाबा साहब अम्बेडकर व सरदार वल्लभ भाई पटेल आदि इतने हावी हुए कि पूरे भारत मे सुशासन की मांग बढती गई और स्वशासन की भूख घटती गई । यह भूख इस सीमा तक घटी कि भारत की अधिकांश आबादी राज्य की मुखापेक्षी हो गई।

लिहाजा हम राज्य से स्वशासन की मांग न कर समाधान की मांग करने लगे हैं । यहॉ तक कि सर्वोदय कार्यकर्ता भी इससे अलग नही है। हमे चाहिये कि हम शासन के अधिकारो का विरोध करें किन्तु हम शासन के अधिकारो का विरोध न कर आदेशों का विरोध करने लगते है। परिणाम यह है कि शासन के अधिकार बढते चले गये है और हम अनावश्यक संघर्ष करते चले आ रहे हैं।

हमारे वयोवृद्ध विचारक स्वतंत्रता सेनानी व वर्धा (महाराष्ट) वासी संघर्ष के प्रतीक ठाकुर दास बंग ने कई बार राज्य के अधिकारो के विरूद्ध संघर्ष की आवाज उठाई किन्तु वह आवाज सर्वोदय के सत्ता धडो को पसंद नही आई और किसी न किसी तरह उन्हे रोक दिया गया । अंत मे लाचार होकर उन्होने 20 सितम्बर 2008 को सेवा ग्राम आश्रम (वर्धा) की बैठक मे लोक स्वराज्य अभियान शुरू करने की घोषणा की जो धीरे धीरे आगे बढ रहा है ।

स्वाभाविक है कि कुछ लोगों को यह अभियान पंसद न आया क्योकि यह अभियान मुख्यरूप से संविधान मे परिवार , गांव व जिले के अधिकारों की सूची शामिल करने तथा निर्वाचित जन प्रतिनिधि को वापस बुलाने के अधिकार की मांग को लेकर हैं। यह आंदोलन सर्वोदय परिवार के अन्य क्रियाकलापो में कही बाधक नहीं है किन्तु फिर भी कुछ लोग किसी न किसी बहाने इस अभियान के विरूद्ध भ्रम फैलाते रहते है । यह अभियान तत्काल सरकारी वेतन से जुडे लोगो की मनमानी वेतन वद्धि के विरूद्ध भी जागृति का कार्यक्रम चलाया है । तथा लगातार इस दिशा मे आगे बढ रहे है । लोक स्वराज्य अभियान सर्वोदय के अन्य कार्य के अतिरिक्त यह कार्य भी कर रहा है जिसमे सर्वोदय से अलग लोग भी जुडते जा रहे है।

मुझे महसूस होता है कि बंग जी के नेतृत्व मे प्रारभ लोक स्वराज्य अभियान की सफलता आज की सबसे बडी आवश्यकता है। यह अभियान गांधी विनोबा जय प्रकाश के अधूरे कार्य को आगें बढाने का श्रेष्ठतम मार्ग है । नफरत की आग मे जलने वालो से प्रभावित हुए बिना इस अभियान को समझने की आवश्यकता है । मेरा आपसे निवेदन है कि आप लोक स्वराज्य अभियान से जुडे और गांधी जी की अंतिम योजना को साकार करें।''

इस विवेचना मे विनाबा जी के विषय मे कुछ निम्न कोटि के आरोप लगाये गये हैं। जो उचित नही है । हो सकता है कि गांधी जी की क्षमता विनोबा जी से ज्यादा भी हो किन्तु गांधी जी के बाद तो विनोबा के समकक्ष भी कोई नही था। बिनोबा जी ने अपने जीवन काल मे जो कुछ किया उस सीमा को भी तो बाद मे कोई नही छू सका । हम चाहते है कि आप विनोबा जी के विरूद्ध लिखना बन्द कर सके तो बहुत अच्छा होगा । हम विनोबा जी की झूठी आलोचना नही सुन सकते।

उत्तर– मैने गांधी और विनोबा की समीक्षा करते समय सब प्रकार की मर्यादाओ का ध्यान रखा था क्योकि मेरा उद्धेश्य विनोबा जी की आलोचना करना नही था। किन्तु विनोबा जी की समीक्षा करना तो था आप समीक्षा से हटकर विनोबा जी के प्रशंसक है तो मुझे भी विनोबा जी की आलोचना करने का उतना ही अधिकार है जितना आपको प्रशंसा करने का। विनोबा जी की नेहरू परिवार के प्रति गुप्त वचन बद्धता या आसक्ति ने भारत मे गांधी विचार को बहुत पीछे ढकेल कर रख दिया । विनोबा जी ने लोक स्वराज्य की अवधारणा को नेहरू आसक्ति के कारण ही पीछे ढकेल दिया अन्यथा कोई कारण नही था कि गांधी के जाते ही गांधीवादी इस तरह गुमराह हो जाते । गांधी वादियो को उस समय ग्राम स्वराज्य के लिये नेहरू सरकार से संघर्ष करना था किन्तु विनोबा के कारण गांधीवादी नेहरू सरकार से संघर्ष का मार्ग छोडकर भूदान मे लग गये । परिणाम स्वरूव राजनेता स्वतंत्र से आगे बढकर उच्श्रृखल होते गये। यदि विनोबा जी जय प्रकाश जी को नैतिक समर्थन देते तो जे. पी. इस सीमा तक राजनेताओ पर निर्भर नही होते । जे. पी. असफल नही होतें यदि संयुक्त सर्वोदय के हाथ मे कमान रही होती।

विनोबा जी किस सीमा तक नेहरू परिवार के मोहजाल से लिप्त थे इसका उदाहरण हमारे इतिहास के जानकार ईश्वर दयाल जी ने बताया कि विनोबा ने इदिरा गांधी के प्रधानमंत्री काल मे कभी गोहत्या बंदी को जीवन मरण का प्रश्न नही बनाया । किन्तु इंदिरा जी के हटते ही विनोबा जी ने मुरारजी देसाई काल मे गो हत्या बन्दी को अपने जीवन के साथ जोडकर आमरण अनशन कर दिया । मुरार जी भाई ने इस शर्त पर गो हत्या बन्दी स्वीकार कर ली कि राज्य सभा मे काग्रेंस भी समर्थन करे क्योकि राज्य सभा मे सरकार अल्प मत में थी । लोकसभा मे विल पास हो गया किन्तु राज्य सभा मे काग्रेंस ने इन्कार कर दिया । शीघ्र ही मुरार जी सरकार हट गई और इदिरा जी प्रधान मंत्री बनी तो विनाबा जी अनशन करना भूल गये । विनोबा जी के गुप्त नेहरू परिवार मोह के कारण ही आज सर्वोदय के अनेक उच्च लोग लोक स्वराज्य आंदोलन को पलीता लगाते रहते है।

मै नही चाहता कि गडे मुर्दे मैदान मे आवे । विनोबा जी की चर्चा का अब कोई उपयोग नही किन्तु विनोबा जी के बताये मार्ग की समीक्षा तो करनी ही चाहिये । मेरा मत है कि हम गांधी और विनोबा की ठीक से समीक्षा करे और विनोबा की राजनेता अंध भक्ति की सलाह से हटकर राजनीति की गलत नीतियों के विरूद्ध गांधीवादी संघर्ष की राह पर चलना शुरू करे।

(च) प्रश्नोत्तर

(2) श्री एन के सिंह , राज्य सभा सदस्य , अर्थ शास्त्री ,जदयू , विहार

सुझाव – भारत में बिजली का अभाव संकट के रूप में खड़ा हो गया है। इसमें पॉच मुद्दे विचारणीय है।

(1) भारत मे बिजली की उपलब्धता प्रतिव्यक्ति सात सौ कि. वाट है जबकि अमेरिका में चौरासी सौ है। हमारी खपत तो चीन से भी आधी है।
(2) भारत मे बिजली बहुत मंहगी है।
(3) उपलब्धता अनिश्चित है।
(4) उत्पादन ओर मांग के बीच भारी अंतर हैं ।
(5) कर्मचारियों का वेतन बढ़े अन्यथा अच्छे कर्मचारियों का अभाव हो जायगा।

(3) श्री भरत झुनझुनवाला ,प्रसिद्ध अर्थशास्त्री ,

(1) भारत मे प्रत्येक व्यक्ति की आय और बिजली कि खपत दोनो की साथ साथ तुलना करनी चाहिये।

(2) भारत मे बिजली उत्पादन से पर्यावरण को भारी क्षति होती है।क्योकि भारी मात्रा मे कोयला या डीजल खर्च होता है। बिजली पर सात रूपया प्रति युनिट का पर्यावरण टैक्स लगा कर उसे मंहगा कर देना चाहिये।

(3) बिजली की मुल्य वृद्धि के बाद उसका उत्पादन लाभकारी हो जायगा । उत्पादन वृद्धि स्वयंमेव होगी । सौर उर्जा या गोबर गैस उत्पादन बढेगा । खपत घटेगी सब इस प्रकार के लाभ होगे।

(4) बिजली की मुल्य वृद्धि से भारत सरकार को प्रति माह चार सौ अरब रूपया प्राप्त होगा । यह राशि गरीब परिवारों को बराबर बराबर बांट सकते हैं । सरकार की लोकप्रियता भी बढ़ेगी । तथा समस्या का भी समाधान हो जायगा । वेतन विसंगति भी दूर कर सकते हैं । यदि हमारे देश का उत्पादन मंहगा होने से आयात निर्यात प्रभावित हो तो प्राप्त पर्यावरण कर का एक भाग उसकी दर सुधारने पर भी लगा सकते है

उत्तर – भरत झुनझुनवाला जी अर्थ शास्त्र के साथ साथ समाज शास्त्र के तालमेल की चिन्ता करते है और एन के सिंह जी अर्थशास्त्र का राजनीति शास्त्र के साथ का तालमेल बनाते हैं । यही कारण है कि एन के सिंह जी सस्ती बिजली के पक्षधर है और झुनझुनवाला जी मंहगी बिजली के । एन के सिंह जी जदयू की ओर से राज्य सभा सदस्य है । अपने दल की नीतियों के पक्ष में बोलना उनकी मजबूरी है। अभी करीब तीन माह पूर्व ही स्वतंत्र चर्चा में उन्होने कहा था कि तटस्थ विचारक के रूप मे कृत्रिम उर्जा की मूल्य वृद्धि उचित कदम है किन्तु राजनैतिक दृष्टि से यह कदम सरकार के लिये बहुत अधिक अलोकप्रिय होगा।

श्री एन के सिंह जी ए. पी.डी. आर. पी. के राष्ट्रीय अध्यक्ष रह चुके है । ए. पी.डी. आर. पी. बिजली के संबंध मे विचार मंथन करके नीति निर्माण करती है । यह सरकारी सस्था है । एन के सिंह जी को बिजली के विषय में सोचना था जो उन्होने सोंच सोंच कर सलाह दी। मेरे खेत मे एक बूढा यादव भैस चराता था। उसे भैस के हितो की तो चिन्ता रहती थी किन्तु खेत की फसल की चिन्ता नही रहती थी। यदि कभी मौका मिला तो मेरी हरी खेती चराने मे भी उसे कष्ट नही होता था क्योकि उसका मोह फसल की अपेक्षा भैस के स्वास्थ्य के प्रति अधिक जुडा था । यदि वह बूढा यादव भैस विभाग से हटकर खेत सुरक्षा का प्रबंधक होता तो उसकी भूमिका भिन्न होती। एन के सिंह जी ने जो भी तर्क दिये उनमे उनकी वफादारी तो झलकती है किन्तु यथार्थ नहीं । एन के सिंह जी ने बिजली और श्रम के संबंधो पर कभी नहीं सोचा कि सस्ती उर्जा श्रम की मांग और मूल्य पर क्या प्रभाव डाल सकती है। यदि श्री सिंह श्रम विभाग से संबधित होते तो यही एन के सिंह जी बिजली का मूल्य तीन गुना करने की सिफारिश करते क्योकि उस स्थिति मे उनका पूरा सोच ही बदल जाता। झुनझुनवाला जी भी स्वतंत्र है और मै तो हूँ ही । हमें बिजली के मूल्य की चिन्ता न होकर उससे गरीब ग्रामीण श्रमजीवी पर पडने वाले प्रभाव की चिन्ता है। श्री सिंह ने सम्पन्न देशो के आकडे देकर कुछ बाते कही है । उन्हे यह नही पता की उन सम्पन्न देशो की प्राथमिक समस्या गरीब ग्रामीण श्रम जीवी नहीं है । एक भूखे श्रमिक को बीस रूपया मिले और वह मक्का की रोटी न खाकर किशमिश खाने की चिन्ता करे तो भूल किसकी है? यहां तो एन के सिंह जी सौ रूपया दैनिक में काम न पा सकने वाले बेरोजगार को सस्ती बिजली ,सस्ता डीजल, सस्ती शिक्षा, आदि सबकी सलाह तो दे रहे है ।किन्तुं श्रम की मांग और मूल्य वृद्धि के विषय में चुप है क्योकि यह विषय उनका नहीं है।श्रम और उर्जा के संबंधों की स्वतंत्रता पूर्वक समीक्षा करनी होगी । ये दलो की सीमाओ से

बधे लोगो के वक्तव्य गुमराह कर सकते है क्योकि वे स्वतंत्र भी नही है, और उनका स्वतंत्र ज्ञान भी नही है।

(छ) (4) श्री एम एस सिंगला , अजमेर, राजस्थान

प्रश्न – ज्ञान तत्व 182 जातीय पंचायत और प्रेम विवाह पर विस्तृत चर्चा पढने को मिली । इस विषय पर एक स्थानीय दैनिक के 'परिवार 'पत्रिका मे भी सामग्री देखी थी । स्वाभाविक है कि दैनिक की सामग्री मे पत्रकारिता के अनुरूप कुछ भडकाउपन मिला जैसे आदिम सोच, वर्तमान प्रगतिशील युग की दुहाई आदि । यहॉ विषय से जुंडे कुछ चुने गये बिन्दुओ पर चर्चा करके समस्या के मूल मे जाने का प्रयास प्रस्तुत हैं ।

1 विवाह – मूल रूप से विवाह ह्दय से संबन्धित मामला है। इसलिये पुरातन व्यवस्था के अनुसार अपनी पसंद की युवती को भगा ले जाना विवाह होता था । कालान्तर मे देशकाल के अनुसार व्यवस्था मे परिवर्तन होते आये । जिस व्यवस्था का उपर उल्लेख किया गया है उसके उदाहरण आदिवासी क्षेत्रो मे आज भी देखने को मिलते है जिन्हे समाज मे मान्यता प्राप्त होती है।

2. ज्ञान का अभाव– भारत मे प्रचलित दहेज ,सती, पर्दा, जैसी अन्याय प्रथाये और मान्यताऍ है । उनके विरोध मे उनके इतिहास ,उनके मूल्य ,उनके कारण , उनके वास्तविक स्वरूप आदि को जाने विना उन पर चोट करना शुरू कर दिया जाता है ।आजादी के बाद से तो राजनीति मे भी अपनी पैठ बनानी शुरू कर दी है। जो वस्तुतः अनावश्यक है। जनता मे भी एक टेव पडी दिखाई देती है कि वह छोटी छोटी बातो को लेकर सरकार का मुॅह ताकती है और सरकार यह दिशा निर्देश देने की बजाय कि इसे तो समाज को ही संभाल लेना चाहिये , वह भूल जाती है कि जनता हर बात के लिये सरकार का मुह देखने लगी है ।

3 सामाजिक व्यवस्था और कानून– इन दोनो के अपने अपने क्षेत्र है। उन्हे वैसे ही अपने अपने दायरे मे रहने देना उचित है। परन्तु प्रायः दिन प्रति दिन हर स्थिति में विधि शरणं गच्छामी की स्थिति बन जाती है। मूलतः कानून अपराध पर नियंत्रण करने के लिये होता है । अपराध प्रायः वह घटना या प्रकिया या कृत्य होता है जो छिप कर किसी को आर्थिक –शारीरिक नुकसान पहुचाने के लिये किया जाता है । किसी को अंधेरे मे रखकर किया गया कृत्य भी अपराध है जिससे आगे चलकर उस व्यक्ति को किसी प्रकार की हानि उठानी पडे। परन्तु जो तथा कथित गलत काम सार्वजनिक रूप से खुले आम समाज द्वारा किया जाता है वह अपराध की श्रेणी मे न आकर कुप्रथा की श्रेंणी मे आता है। यहां तथा कथित शब्द का प्रयोग इसलिये हुआ है कि यदि वह कृत्य अपराध ही हो तो समाज उसे करेगा ही नही । अतः उसके प्रति कानून बनाना उचित नही ठहरता । इसके लिये समाज को समझाने जाग्रत करने और सशक्त बनाने की आवश्यकता होती है

इस बात को सती प्रथा के उदाहरण से समझा जा सकता है जब अग्रेज भारत आये तब यहां सती प्रथा का बोलबाला था। अंगेजी कानून लागू हो चूके थे पर अंग्रजो ने सती प्रथा रोकने का कानून नही बनाया । उस पर सोचा भी नही । कहा जा सकता है कि इस बारे मे सोचने की उन्हे क्या पडी थी । परन्तु बात ऐसी नही थी । उन्होने सामाजिकता और अपराध को अलग करके देखा और समझा। राजा राममोहन राय ने इस दिशा मे पहल की । राजाराममोहन से शासन का कुछ विमर्श हुआ होगा ,परन्तु सती प्रथा रोकने का कानून बना दिया गया।

विवाह व्यवस्थाएँ आठ प्रकार की है । प्रेम विवाह भी इन आठ मे से ही एक है।

हर माता पिता सन्तान को बडे अरमानो से पालते है । यदि सन्तान के मनमाने कृत्य से उनके मनसूबो पर , उनके अरमानो पर पानी फिरता है तो उन्हे हत्याओ जैसी जटिल स्थितियो का सामना करने तक की नौबत आ जाती है । हालांकि फिल्म जगत ने इस समस्या को बहुत कुछ हल कर दिया है । ऐसी स्थिति मे यह भी देखने मे आया हे कि यौवन के नशे मे जब किसी के कदम डगमगा जाते है और दोनो पक्षो को पछताना पडता है तब उनके अभिभावको की स्थिति अधिक विकट हो जाती है । वैसे यह स्थिति आज अभिभावको द्वारा देखभाल कर किये गये विवाहो मे भी धोखे के कारण उत्पन्न होने लगी है।

गान्धर्व विवाह मे भी दो स्थितियां बनती है एक तो अन्तरजातीय विवाह की , दूसरी सगोत्र विवाह की । अंतर्जातीय विवाह दो प्रकार के होते है : अनुलोम विवाह – उची जाति का पुरूष निम्न जाति की कन्या, प्रतिलोम विवाह– उच्च वर्ण की कन्या निम्न वर्ण का पुरूष। आजकल भारत सरकार उत्थान के नाम पर अनुलोम विवाह को प्रोत्साहित करती है।˙ इस प्रकार के अंतर्जातीय विवाह विवाद और उलझन के कारण बनते है । एक ओर अंतरजातीय विवाह है जो किसी विदेशी से किया जाता है।

मेरी दृष्टि मे सबसे गंभीर संम्बन्ध सगोत्र विवाह का है । इससे यदि अभिभावको को ज्ञान हो तो उन्हे अपनी संतान को उससे होने वाली नैसर्गिक हानि को समझना चाहिये । सगोत्र विवाह कभी भी अच्छा नही होता क्योकि एक तो उसके प्रच्छन्न परिणाम कभी भी अच्छे देखने मे नही आए है । दूसरे सगोंत्र विवाह से उत्पन्न संतान अपेक्षा कृत अपरिपक्व ,किंबा कतिपय कमजोरियां लिये होती है कानूनी व्यवस्था चाहे जो हो । इस विषय को आनुवंशिकी (ीमतपकपजल)विषय से बेहतर समझा जा सकता है। मुझे लगता है कि जहा शासन स्कूलो मे यौन शिक्षा देने की बात करता है वहा ऐसे स्वस्थ विषयो को छुआ जा सकता हे । अमेरिका का एक प्रकरण तो ऐसा देखने मे आया था जहा सगे भाई बहनो मे संबंध स्थापित हो गया है और भाई ने बमुश्किल उस स्थिति से पिण्ड छुडाया। यो पाश्चात्य समाज मे कौटुम्बिक व्यभिचार विशेष बात नहीं।

यहा महाभारत का उदाहरण उल्लेखनीय है। यह कितना मान्य हो पायगा ,नही कहा जा सकता । महाभारत मे राजा शान्तनु मायावती की संताने चित्रांगद ओर विचित्रवीर्य असमय मृत्यु को प्राप्त हुई। उनके संतान भी नही हुई । अब प्रश्न यह था कि हस्तिनापुर का शासक कौन होगा ? वेदव्रत(भीष्म) तो राजा न बनने की प्रतिज्ञा कर चुके थे तब भीष्म ने नियोग की बात की । इसे मायावती ने मान तो लिया किन्तु नियोग के लिये उसने अपने ही पूत्र वेदव्यास को प्रसन्न किया । परिणाम यह हुआ कि दोनो रानियो से नियोग करने पर दोनो बार उपयुक्त सन्तान प्राप्त नही हो सकी । महाभारत मे उसे जिस ढ़ग से भी वर्णित किया गया हो परन्तु वह स्थिति माता के गर्भ से जन्मे व्यक्ति से नियोग के कारण सफल नही हो सका । पहली बार में संतान अन्धी हुई तो दूसरी बार पीली अथवा रूग्ण । तीसरी बार नियोग रानी से न होकर दासी से हो गया । परन्तु संतान श्रेष्ठ उत्पन्न हई । किन्तु दासी पुत्र होने से विदुर राजा बनने योग्य नही माने गये । तथ्य यह है कि यदि नियोग मायावती के पुत्र से न होकर अन्य किसी योग्य राजपुरूष या वैसा कोटि के किसी अन्य पुरूष से सम्पन्न कराया होता तो बात बन सकती थी । यही कारण है कि चाणक्य ने राजनीति मे राजा को विदेशी राजा की कन्या से विवाह को उपयुक्त बताया है ।

इस प्रकार स्थितियो को समझने के लिये इतिहास है ,सिद्धान्त है और व्यवहारिकता भी है । बडी कमी यह है की आज का मानव, विशेष रूप से भारतीय , केवल आगे दौडना चाहता है। उसे

पुरातन को जानने मे न तो रूचि है और न उसमें आस्था । ऐसे मे आवश्यकता इस बात की भी है कि विवाह की सही वयःसंन्धि होती है उसी का पालन करना चाहिये । परन्तु भारत सरकार ने इस आयु पर भी नियंत्रण कर लिया है । भारत सरकार ने विवाह की आयु को भी कानून मे बांध दिया गया है उसे इस परिणाम से कुछ लेना देना नही है कि इस व्यवस्था से समाज को किस गर्त मे धकेला जा रहा है।

लेख की अन्य बाते –

कानून ने सगोत्र विवाह को वैध घोषित किया.....

वस्तुतः कानून बनाते समय प्राकृतिक नियम और मान्यताओ को ध्यान मे रखा जाता है और रखा जाना चाहिये । परन्तु ऐसा नही होगा

पहले संवैधानिक हस्तक्षेप शून्य था।

यही श्रेंष्ठ और आदर्श स्थिति होती है। विवाह मौलिक अधिकार है परन्तु उसका दुरूपयोग होने पर पारिवारिक सामाजिक बहिस्कार ही पर्याप्त है और वही होना चाहिये ।

अंग्रेजी शासन ने व्यक्ति परिवार और समाज की सारी अवधारणाओ को उलट पलट कर रख दिया।

वह शासन जानता था कि यदि उन्हे अपने पैर यहा जमाने है तो वही एक रास्ता हैं इसलियें उसने वही किया ।उन्होने विधि मे पति पत्नी को अलग माना। आयकर या आय को लेकर भी व्यक्ति को ही मान्यता दी । कांग्रेस पार्टी कागठन अंग्रेज ह्यूम ने किया था । भारतीयो ने विशेष रूप से नेहरू के सान्निध्य मे, कांग्रेंस मे शामिल होकर न केवल हिन्दुत्व को अपितु राष्ट्रीयता को भी घता बता दी थी । यह कहा जा सकता है । आज वही विचार धारा फूल फल रही हैं।

अब एक ही विचार धारा हावी है कि परिवार और समाज व्यवस्था समाप्त करके राज्य या व्यक्ति को सर्वाधिकार सम्पन्न बनाया जाय । यही कुटनीति है कि अब इसके परिणाम भी देखने मे आने लगे है –छोटी–छोटी बाते को लेकर जनता सरकार का मुह ताकने लगती है , फलस्वरूप सरकार इसे अपनी अहमियत मान कर फूल जाती है ।

हमारे राजनेता झगडे पैदा तो करना जानते है पर सुलझा नही पाते है।झगडे पैदा ही इसलिये किये जाते है कि वे चलते रहे और वे अपनी रोटिया सेकते रहे । अतः यह कहना ठीक नही है कि सुलझा नही पाते, बल्कि सुलझाना ही नही चाहते । पैदा किये गये झगडे सुलझाने के लिये नही होते है। इतिहास साक्षी है। चित्रकार ,पत्रकार ,कलाकार, के सदृश्य नेता समस्याकार है

संविधान मे हमारे कर्तव्यो को उनका अधिकार घोषित करके झगडा पैदा कर दिया ।

बन्दर के हाथ मे उस्तरा पकडना इसी को कहते है । बन्दर क्या जाने कि उसका नतीजा क्या होगा।

(श्री एम एस सिंगला , अजमेर, राजस्थान)

देश के राष्ट्रगान के रूप मे अपनाऐ गये गीत 'जन गन मन अधिनायक.....' के रचयिता कवीन्द्र रवीन्द्र है । उनहोने यह रचना किंग जार्ज 5 के भारत आगमन पर सन 1911 मे उनके सम्मान मे की थी । अंग्रेजों को यह रचना अति रूचिकर लगी । स्वाभाविक है कि जब ब्रिटिश शासक को भारतीयो के जन गन के मन

को अधिनायक और उसके भाग्य विधाता बता दिया जाय तो इससे बडी बात क्या हो सकती है । मान्यता तो यहा तक है कि कवीन्द्र रवीन्द्र को उनकी रचना गीतांजली पर नोबल पुरस्कार प्रदान किया जाना भी इसी रचना का प्रतिफल था।

वाइसराय लार्ड वेवल के चलते अंग्रेज शासन ने इस देश की एक कमजोरी भाप ली थी। उसे अंजाम देने व उसका लाभ उठाने के लिये उसने केवल लार्ड माउण्टबैटन को यहॉ भेजा। माउण्टबैटन ने नेहरू को ही देश के प्र. मंत्री के योग्य होना करार दिया । ऐसी बडी घटनाओ मे बडी बडी घटनाएँ छिपी होती है। जो अनुमान और परिस्थितियों से ही समझी समझाई जा सकती है।

देंश को आजाद करने मे नेहरू और माउण्टबैटन के बीच कुछ अति गुप्त समझौते हुऐ जिनके चलते देश केवल राजनैतिक रूप से आजाद हो सका था । भारत के आजाद होने के पीछे अनेक बाते थी। जिन्हे नेहरू से मनवा ली थी । कहा जा सकता है कि ब्रिटिश ने चाहा था कि आजाद हिन्दुस्तान का राष्ट्रगान इसे ही रखा जाय । यहा नेहरू की तनिक मानसिकता की झलक पा लेनी चाहिये। नेहरू मन से पूर्ण निरंकुश शासन मे विश्वास करने वाला व्यक्ति था। उसकी वह महत्वाकाक्षा लोकतंत्र के जरीये ही पूरी हो सकती थी जो हुई । समझा जा सकता कि इस मानसिकता चलते इस गीत मे यदि भारतीय राजनेताओं को वही गौरव बरबस मिल जाय तो क्यो छोडा जाय । तब से समझिये कि यह कांग्रेस की पसंद रहा।

उक्त संकेत के बाद यदि कोई भी भारतीय इन कुछ प्रश्नो पर विचार करे तो उसे वस्तु स्थिति की झलक मिल सकती है । देश का नाम 'इण्डिया ' ही क्यो रहने दिया गय ? देश का राष्ट्र धर्म क्यो नही घोषित किया गया? देश मे केन्द्रिय राजभाषा का मामला क्यो उलझा कर छोड दिया गया? जब ऐसे तत्वो को ही नजर अंदाज कर दिया गया तब राष्ट्रीय पशु पक्षी या राष्ट्र चिन्ह ही निर्धारित करना मात्र कुछ औपचारिकताएँ पूरी करके आम जन भ्रमित करना था।

यह सोच सही नही है कि मुसलमानो के भय से वन्दे मातरम को राष्ट्रगान घोषित नही किया गया । नेहरू ने अपने पहले राष्ट्रपति की परवाह न करते हुए हिन्दु कोड बिल ही क्यो और कैसे पास करवाया । जिस पर आज सुप्रीम कोर्ट की भी विपरीत प्रतिक्रिया है ? सच तो यह है कि देश पर कोई राष्ट्रीय कृत्य लागू नही है । राष्ट्र मात्र 'अखिल भारत का अर्थ देने के काम आता है । ऐसी बातो को लेकर आज राजनेताओ को छोडकर आम जन यह महसूस करने पर मजबूर है कि राष्ट्रवादी तो भारत माता पर प्राण निछावर कर गये, अब तो भारत को नोच कर खाने वाले शेंष बचे है।

राष्ट्रगान लम्बे समय से विवाद का विषय रहा है तथ पत्र पत्रिकाओ मे प्रयाप्त सामग्री प्रकाशित हो चुकी है।

विस्तार मे बहुत कुछ कहा जा सकता है किन्तु स्थिति की तह तक पहुचने के लिये इतने तथ्य ही प्रयाप्त होने चाहिये।

पत्र बहुत समय के बाद लिख पा रहा हूँ । क्षमा करें । स्वास्थ्य ठीक नही रहता है तथा कुछ विपरित परिस्तिथियॉ है।

उत्तर – आपने जो विचार रखे है उन पर मेरी कुछ सहमति है और कुछ असहमति भी । व्यक्ति परिवार और समाज के अधिकारो की सीमाओ पर विचार करने की जरूरत है । पश्चिम परिवार और समाज को

कोई अधिकार देने के विरूद्ध है । पश्चिम के अनुसार व्यक्ति सम्पूर्ण अधिकार सम्पन्न इकाई है । व्यक्तियो की सहमति से ही समाज बनता है । भारत मे समाज स्वयं को सर्व शक्तिमान इकाई मानता है । समाज का ही नवीनतम रूप राज्य बन गया है। राज्य न परिवार को मानता है न समाज को क्योकि समाज तो वह स्वयं ही है। व्यक्ति को उसने कुछ अधिकार छोड ही रखे है । बीच मे न परिवार है न समाज । इस अस्पष्टता के कारण ही टकराव होते है । कुछ लोग ऐसे है जो पुरातन सस्कृति से इस सीमा तक चिपटे है कि वे नया संशोधन सुनने को भी तैयार नही । कुछ अन्य लोग ऐसे है जो हर नये को ही ठीक मानने को तैयार है। इन्हे हर पुरातन मे पिछडे पन की गंध आती है । मेरा विचार है कि नये या पुराने का विवाद छोडकर यथार्थ की चर्चा करे । सबसे पहले यह तय करे कि व्यक्ति परिवार समाज और राज्य के अधिकारों की सीमाऍ क्या हो?

राष्ट्रगान सम्बन्धी चर्चा में आपने नेहरू और लार्ड माउन्टबैटन के बीच किसी गुप्त संधि का उल्लेख किया। संभव है कि आपको किसी गुप्त संधि की जानकारी हो । किन्तु मुझे नही होने से मै स्वयं को दूर रखना चाहता हूॅ । मै नेहरू जी को सत्ता संघर्ष का एक हिस्सा तो मानता हूॅ किन्तु हर मामले में नेहरू जी का विरोध करना मेरा स्वभाव नही है। पिछले ज्ञानतत्व मे मैने आपको अपना समझकर कुछ गर्मा गर्म उत्तर दे दिये थे जिससे नाराज होकर आपने प्रश्न करना ही बन्द कर दिया था । अब मै वैसी स्थिति नही आने देना चाहता हूॅ । मेरी प्राथमिकता है विचार मंथन और आपकी है प्रचार प्रसार । आप जिसे ठीक मानते है उसका प्रचार करते रहते हैं। मेरा मार्ग भिन्न है। मेरे विचार मे आप जहा ठीक है, उसे मै छोडकर आगे बढ जाता हूॅ । जहा असहमति है उन्ही मुद्वो पर मै तर्क वितर्क करता हूॅ । इस मत भिन्नता के कारण कई साथी नाराज हो जाते है किन्तु सोचिये कि यदि आपकी मजबूरी है तो मेरी भी तो कुछ मजबूरी है।

(झ)अपनो से अपनी बात

कई माह आपसे अपनी बात पर संदेश का आदान प्रदान नही हुआ । अब कुछ योजना बन पाई है। अपनो से अपनी बात में योजना का प्रारूप प्रस्तुत है । आप भी अपने सुझाव भेज सकते है।

पचीस दिसम्बर चौरासी तक मै अंतिम रूप से समझ चुका था कि सत्ता के माध्यम से किन्ही समस्याओ का रूपान्तरण तो हो सकता है किन्तु समाधान नही । पचीस दिसम्वर चौरासी को मैने राजनीति छोडकर घोषित किया कि मै पचीस दिसम्बर दो हजार नौ तक अनुसंधान तथा उनके निष्कर्षो के आधार पर समस्याओ के समाधान का मार्ग खोज लूगा । मैने पूरा प्रयत्न किया । अनुसंधान कार्य अभूतपूर्व रूप से सफल रहा । विश्व की अनेक समस्याओ के कारण और समाधान बताने की स्थिति मे हम पहुच सके है । किन्तु हम समाधान का मार्ग खोलने मे सफल नही हो सके । समाधान सिर्फ एक था। ''लोक स्वराज्य '' रिसर्च का प्रयोग पूरा हो चुका था।दो हजार पांच के प्रारम्भ तक स्पष्ट दिखता था कि सफलता निश्चित है । ठाकुर दास बंग पूरी तरह सहमत थे तथा अमरनाथ भाई दुविधा मे थे । सर्वोदय के सामान्य कार्यकर्ता दो भागो मे बटे हुये थे । सिद्धराज जी लगभग सहमत थे । किन्तु अन्य उच्च पदाधिकारी या तो तटस्थ थे या विरूद्ध। कार्यकारिणी की बैठक मे मै तो जा नही सकता था । बंग जी को अलग थलग कर दिया जाता था। समर्थक दब जाते थे । और विरोधी हावी हो जाते थे । सर्वोदय नेतृत्व से निराश होकर मैने दिल्ली को अपना स्वतंत्र कार्यालय बनाया । गोविन्दाचार्य जी पर आशा की किरण जगी किन्तु शीघ्र ही अनुभव हुआ कि अभी उनका सत्ता मोह समाप्त नही हुआ । फिर से घूम फिर कर बंग जी पर ही सारी

आशाएं केन्द्रित हुई । बंग जी ने भी हिम्मत की कि यदि पूरा सर्वोदय तैयार न भी हो तब भी यह व्यवस्था परिवर्तन अभियान सफल किया जावे । इस आधार पर योजना बनने लगी।

स्पष्ट दिख रहा था कि विचार प्रचार के द्वारा जनमत खडा करना संभव नही है । अतः हठ योग और बलिदान आवश्यक है । बंग जी इसके लिये तैयार हुए। तय किया गया कि''परिवार गांव जिले के अधिकारो की सूची संविधान मे डालने तथा राइट टू रिकाल'' इन दो मुद्वों पर आंदोलन हो और आंदोलन का चरमोत्कर्ष बलिदान से हो । दो हजार आठ के तीस जनवरी से आंदोलन शुरू हो तथा अगस्त मे बंग जी दो मुद्वो पर आक्रमण अनशन शुरू करे। यदि बंग जी सहादत हो जाये या जेल मे डाल दे तो दूसरा क्रम मेरा रहे । मेरे बाद आर्य भूषण भारद्वाज जी उनके बाद कृष्ण कुमार खन्ना जी ,उसके बाद कृष्ण चन्द सहाय जी फिर लक्ष्मी नारायण शर्मा जी फिर चन्द्रेश्वर जी तथा उनके बाद बहुत लम्बी सूची स्वयं बन जायगी। ऐसा विस्वास था कि बंग जी की शहादत ही सरकार नही झेल पायगी और ज्यादा ही टकराव हुआ तो एक दो तक जाते जाते सरकार झुकेगी ही । इस टीम मे सबकी सहमति बन चुकी थी। सिर्फ खन्ना जी थोडा हिच किचा रहे थे । वे राष्टपति के वेतन वृद्धि को मुद्वा बनाना चाहते थे क्योकि सर्वोदय इस मुद्वे पर सहमत था और मुझे सर्वोदय नेतृत्व की सहमति मे छल महसूस होता था।

अब हमारे समक्ष संकट था नेतृत्व का । अनशन करने बाली टीम के सदस्य नेतृत्व नही करेगें। यह सहमति थी। सबसे पहले राकेश रफीक जी पर सहमति बनी किन्तु एक माह मे ही उन्होने सेज विरोध को प्राथमिकता देनी शुरू कर दी । उनके स्थान पर महावीर त्यागी जी का प्रस्ताव हुआ । त्यागी जी ने स्वयं को इतना सक्षम नही माना । अन्त मे अमरनाथ भाई का नाम आया । अमरनाथ भाई सहमत भी थे किन्तु लोक स्वराज्य विरोधी सर्वोदयी पदाधिकारियो ने उन्हे कड़ाई से रोक दिया । अमरनाथ भाई सब बात पर सहमत थे। किन्तु उन्हे लगता था कि यदि सर्वोदय का एक गुट विरोध किया तो यह अभियान सफल ही नही होगा । वह गुट किसी तरह भी मानने को तैयार ही नही था। मैने अन्तिम प्रयास सेवाग्राम मे किया। नेतृत्व के लिये पंकज जी तैयार थे और क्षमता भी थी । किन्तु गंभीरता शून्य थी । निश्चय हुआ कि दस लोगो का संयोजक मंडल बने । किन्तु पंकज जी ऐसे संयुक्त संयोजक मंडल से सहमत नही थे । मैने और आर एन सिंह जी ने विचार किया और मान लिया कि कोई उपाय नही है। सिंह जी अपने घर चले गये और मैने हार मान ली।

मैने प्रतीक्षा करनी ठीक नही समझी और पचीस दिसम्बर आठ को ही असफलता स्वीकार करके अपनी आत्म हत्या घोषित कर दी जिस पर मै अब तक कायम हूॅ ं।

मेरा मानना है कि विश्व स्तरीय किसी भी समस्या का समाधान लोकतंत्र मे नही है। लोक स्वराज्य ही उसका एकमात्र समाधान है। हम भारत से लोकतंत्र को लोक स्वराज्य मे बदलने की शुरूआत कर सकते थे। हमारे पास बंग जी का मार्गदर्शन भी था। तथा टीम भी बन रही थी । किन्तु सक्षम नेतृत्व का अभाव तथा सर्वोदय नेतृत्व के वामपंथी झुकाव के कारण सफलता नही मिल सकी । अब मेरा समय पूरा हो चुका है। दो हजार नौ भी चला गया है। अब ऐसा प्रयत्न मेरे लिये बीते दिनो की बात हो गई है।

मैने समयबद्ध सफलता मे अपनी असफलता मान ली है किन्तु मै मानता हूॅ कि सक्रियता के लिये एकमात्र मार्ग यही है। बाकी सब रास्ते संशोधन वादी है । व्यवस्था परिवर्तन के लिये तो एक ही मार्ग है। रामानुजगंज विकास खंड मे केशव चौबे जी सक्रिय है । उस कार्य का नाम है ग्राम सभा

सशक्तिकरण । पांच बिन्दूओ को आधार बनाकर नई समाज रचना की शुरूआत है । यह कार्य ठीक गति से चल रहा है । वर्तमान राजनैतिक व्यवस्था मे सुधार के दो मार्ग दिखते है। (1)वर्तमान राजनैतिक परिदृष्य मे मनमोहन सिंह ,सोनिया जी , रमण सिंह , बाबूलाल मरांडी , नीतिश कुमार , शिवराज सिंह चौहान , येंदूरप्पा ,अशोक गहलोत, शान्ता कुमार ,नरेन्द्र मोदी बुद्धदेव भट्टाचार्य जैसे प्रमाणित नेताओ की प्रशंसा तथा अडवानी अर्जुन सिंह , अजीत जोगी , लालू प्रसाद ममता बनर्जी ,मायावती ,मुलायम सिंह , शिवू सोरेन ,जयललिता , जैसे घोषित पद लोलूपो की आलोचना बाकी सबकी गुण दोष के आधार पर समीक्षा।(2) रामदेव जी के आंदोलन का सहयोग। मेरे अधिकाशं साथी रामदेव जी के साथ सहयोग के पक्षधर है और मै अकेला पहली लाइन का पक्षधर हूँ। मै समझता हूँ कि पहली लाइन मे धोखा नही है जबकि दूसरी लाइन मे अनिश्चितता है। व्यवस्था परिवर्तन की दिशा तो सिर्फ चौबे जी वाली लाईन मे ही है। किन्तु व्यवस्था सुधार के लिये भी रामदेव जी की लाइन से मनमोहन सिंह की लाइन अधिक सुरक्षित दिखती है । यह मेरा व्यक्तिगत सोच है । अन्य मित्र तीनो मे से कोई भी लाइन ले सकते है। मै भी रामदेव जी की लाइन का समर्थक हूँ क्योकि लालू मुलायम जैसे तो ये लाख गुने अच्छे है। फिर भी मुझे रामदेव जी की लाइन मे परिवर्तन या सुधार की किसी योजना का अभाव दिखता है। वर्तमान परिस्थितियों मे किसी अच्छे से अच्छे व्यक्ति को भी अधिक शक्ति सौपना कोई अच्छी बात नही । यदि ऐसी तानाशाही ही स्वीकार करनी हो तो नरेन्द मोदी रामदेव जी से ज्यादा राजनैतिक समझ बूझ वाले दिखते है। रामदेव जी ने कोई नई व्यवस्था का प्रारूप नही दिया है । उनकी सिर्फ एक ही बात है कि उनकी टीम को पावर मिले तो वे सबकुछ ठीक कर देगें । रविशंकर महाराज बाबा नागराज जी आदि की सोच भी रामदेव जी के ही समान है कि अच्छे लोग पावर मे होगे तो सव सुधर जायगा। मेरी राय इन सबसे अलग है। मेरी समझ मे जब तक व्यवस्था नही बदलेगी तब तक लोग अच्छे बन ही नही पायेगे। सन सैतालीस मे अच्छे लोग पावर मे ज्यादा थे किन्तु व्यवस्था दूषित होने से अच्छे लोगो का प्रतिशत घटता गया । रामदेव जी सरीखे संत इसी व्यवस्था मे अच्छे लोगो को पावर देने का प्रयत्न कर रहे है। यह उनकी भूल है। मेरी समझ मे व्यवस्था परिवर्तन ही एक मात्र मार्ग है। फिर भी यह मेरे अभी सोचने का विषय नहीं ।

ज्ञान यज्ञ परिवार ट्रस्ट ने मुझे सोचने और करने की स्वतंत्रता दे रखी है । चिन्तन का विशेष दौर तो दो हजार नौ तक पूरा हो चुका है। वैसे सामान्य चिन्तन तो चलता ही रहेगा। करने को अब मेरे वश मे कुछ नहीं । यदि लोक स्वराज्य की दिशा मे कोई ग्रुप कुछ करता है तो मेरा सहयोग संहभागिता समर्थन उसे रहेगा। मै तो समझता हूँ कि अब अपना सारा समय ज्ञान तत्व विस्तार मे लगाउ। मेरी योजना यह है कि राजनेताओ के भरोसे कोई प्रयत्न सफल नही हुए तो अब समाज मे विचार क्रान्ति की योजना की जाय। यह कार्य न तो सक्रियता से होना हैं न ही कोई समयवद्ध योजना से । यह जागृति तो धीरे धीरे ही परिणाम दे सकती है ।

मैने इसके लिये ज्ञान यज्ञ परिवार की संरचना की है। यह परिवार देश भर मे ज्ञान तत्व विस्तार में सहायक होगा। इसके तीन खण्ड है(1) जो लोग सशुल्क पढना चाहगे वे सौ रूपया वार्षिक या पॉच सौ रूपया आजीवन देकर पढ सकते है (2) जो लोग इस ज्ञान तत्व विस्तार में सहायक होना चाहते है वे एक हजार रूपया के संरक्षक बनकर सहायता कर सकते है । उनके नाम से लिखकर उनकी अनुशंसा पर ही या उनके क्षेत्र के किन्ही दस पाठको को निःशुल्क भेज देगे । (3) निः शुल्क पाठक जिन्हे दाता सदस्य से प्राप्त धन पर निःशुल्क दिया जायगा । इस तरह सशुल्क या निःशुल्क पाठको की बडी मात्रा मे संख्या बढाई जा रही है । उज्जैन केन्द्र ने सौ सशुल्क नाम भेजे है। सदा विजय जी आर्य महाराष्ट से भी बारह सौ नाम आये है जो अभी निःशुल्क है। अन्य दस दस बीस बीस नाम सशुल्क या निःशूल्क के आ रहे

है जिन्हे ज्ञान तत्व शुरू किया गया है । अन्य नाम भी जो आयेगे उन्हे भेजा जायगा । हमारे ज्ञान यज्ञ परिवार से सेन्टर प्रभारी इतनी सक्रियता रखेगे कि उन्हे ज्ञान तत्व मिलता है या नही ,उपयोग मे आता है या नहीं इतना देखते रहें तथा यदि कोई शुल्क देना चाहे तो लेकर हमे सूचित कर दे ।

हम प्रयास कर रहे है कि पोस्ट के साथ साथ इमेल से भी ज्ञान तत्व भेज दे । यह ज्ञान तत्व आपको जल्दी मिल जायगा । हम आपको फोन इ मेल से सूचित भी कर देगे।

हम अपना प्रत्येक ज्ञान तत्व वेव साइट पर भी डाल रहे है । आप उन्हे देख सकते है। हम अपने पुराने ज्ञान तत्व भी वेवसाइट पर डालेगे जिससे आप उन्हे कभी भी पढ और देख सकें।

पचीस दिसम्बर दो हजार दस से एक जनवरी तक रामानुजगंज मे ज्ञान तत्व विस्तार सप्ताह का आयोजन है । इसमें तीन प्रकार के कार्य होगे। (1) रामानुजगंज विकास खण्ड के एक सौ तेरह गांवो मे स्वतंत्र सर्वेक्षण तथा सलाह (2) सातो दिनो की ज्ञान कथा का आयोजन (3) आगे की योजनाओ पर प्रति दिन चर्चा। ये तीनो कार्य सातो दिन चलते रहेगें। एक जनवरी को खुली आम सभा सम्पन्न होगी । इन्ही सात दिनो में से इकतीस दिसम्बर को ज्ञान यज्ञ परिवार ट्रस्ट की बैठक भी सम्पन्न होगी । अधिक से अधिक साथी इन आठ दिनों में जितना समय दे सके उतना उच्छा होगा । हमारे केन्द प्रभारियों की सलाह पर आवश्यकता के अनुसार आधा मार्ग व्यय भी दिया जा सकता है ।

आप ज्ञान यज्ञ परिवार के सदस्य बन सकते है ं। ज्ञान तत्व के सशुल्क या निःशुल्क पाठक विस्तार ,उनसे यदा कदा सम्पर्क तथा वर्ष मे एक बार उनकी बैठक रखनी चाहिये । ज्ञान यज्ञ परिवार की न कोई अन्य योग्यता है न ही कोई शर्त और न ही कोई शुल्क ।

इस तरह नयी योजना पर काम हो रहा है। पचीस दिसम्बर के समय प्रत्यक्ष चर्चा भी संभव है। इस बीच आप जितना संभव हो ज्ञान तत्व के सशुल्क या निःशुल्क पाठको के अधिक नाम भेजिये । ऐसे नाम जिनसे आप कभी जानकारी ले सके । यदि कोई एक हजार रूपया वार्षिक देकर संरक्षक सदस्य बन सके तो और अच्छा है क्योकि मेरे पास तो अब वानप्रस्थ के बाद कोई पद और धन शेष है नही जो खर्च हो सकेगा। यदि कोई ज्ञान यज्ञ परिवार का सक्रिय सदस्य बन सके तो उसे प्रेरित करिये। यदि आपके पास साधन है तो ॅमइेपजम पर ॅण्ड्ढ़ौपदकपंण्बवउ प्रतिदिन देखने की आदत डालिये । इन्टरनेट का भी प्रयोग करिये । जहॉ साधन नहीं है वहॉ ज्ञान तत्व डाक से मिलेगा उसका उपयोग करिये।

इतना ध्यान रहे कि मेरा प्रयोग विचार प्रचार नही है। आप मेरे विचारो का प्रचार बिल्कुल मत करियेगा। मेरा उद्धेश्य विचार मंथन है । जो सही लगे सो ठीक अन्यथा विरोध करिये। मुझे उम्मीद है कि वर्तमान विश्व स्तरीय समस्याओ के समाधान में हमारा यह प्रयत्न बहुत सहायक होगा। आशा है कि आप सब ज्ञान यज्ञ परिवार के सदस्य बनकर हमारा सक्रिय सहयोग करेगे तथा ज्ञान तत्व विस्तार में सहायक होगे।